मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्यामुपहास्यताम् ।

प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः।।3।।

अन्वयः: मन्दः कवियशः प्रार्थी प्रांशुलभ्ये फले लोभाद् उद्बाहुः वामन इव उपहास्यतां गमिष्यामि।

अनुवादः: लम्बा मनुष्य ही जिस फल को प्राप्त कर सकता है उसे पाने के लोभ से यदि एक बौना (वामन) अपना हाथ उपर उठाये तो उसकी हंसी ही होगी। उसकी प्रकार मन्द बुद्धि होने पर भी (महान्) कवियों का यश चाहने वाला मैं (भी) उपहास का पात्र ही बनूंगा।

टिप्पणियां:

कवियशः प्रार्थी कवीनां यशः कवियशः तस्य प्रार्थी (तत्पुरुष)। कहा गया है:

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।

नास्ति येषां वशः काये जरामरणजं भयम्।।

प्रांशुलभ्ये प्रांशुना लभ्ये (तत्पुरुष), 'फले' का विशेषण। वह फल जिसे लम्बे कद का (प्रांशु) मनुष्य ही प्राप्त कर सकता है। लम्बे मनुष्य द्वारा ही प्राप्य फल।

उद्बाहुः उद्गतो बाहुः यस्य सः उद्बाहुः (बहुव्रीहि)।

वामनः बौना, छोटे कद वाला मनुष्य।

लोभात् लोभ के कारण। ''हेतौ'' से हेतु के कारण पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग।

उपहास्यताम् उप उपसर्ग, धातु हस्+ण्यत्+तल्। उपहास की पात्रता।